ASIAN JOURNAL OF EDUCATIONAL RESEARCH & TECHNOLOGY Vol. 8 (1), Jan. 2018: 14-16
ISSN (Print) : 2249-7374
Website: http://www.tspmt.com ISSN (Online): 2347-4947

RESEARCH ARTICLE

वर्तमान युग में शांति शिक्षा की आवश्यकता एवं उद्देश्य

अमिता जैन एवं मनोज जैन
जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं (नागौर)
Email: amitajainjuly1@gmail.com, manojjain.8415@gmail.com

Received: 3rd Oct. 2017, Revised: 26th Oct. 2017, Accepted: 30th Oct. 2017

सारांश

युग विशेष की सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैचारिक पृष्ठभूमि के साथ उसके संघर्षों, परिवर्तनों तथा महत्वपूर्ण मोड़ों की छाया साहित्य के आईने में यथावत् देखी जा सकती है, इसी कारण साहित्य को मानवीय सत्ता के अध्ययन की संज्ञा दी जाती है। साहित्य द्वारा हम मानव में चिंतन, मनन, जागृति उत्पन्न कर सामाजिक परिवेश में आये दिलाव को बदल सकते है एवं लोगों के दृष्टिकोण को सकारात्मक रूप प्रदान कर समस्त मानव जगत में शांति स्थापित कर सकते हैं। समाज में व्याप्त संघर्ष, तनावों व टकराव का स्त्रोत मानव मस्तिष्क ही है। शान्ति शिक्षा मानव के मानस में विकसित होती हुई वैचारिक प्रक्रिया से ध्वंस, विनाश, संघर्ष एवं हिंसा जैसे तथ्यों का विनाश करते हुए रचनात्मकता, सहिष्णुता, शान्ति एवं अहिंसा जैसे तत्वों के प्रक्षेपण व निर्माण की प्रक्रिया है। यह हमारे मूल्यों, अभिवृत्तियों तथा सामाजिक सांस्कृतिक विविधताओं के प्रति हमारे दृष्टिकोण में सहिष्णुता तथा मानवीय गरिमा के तथ्यों का समावेश करवाने की प्रक्रिया है।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय अभिलाषाओं एवं सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप देश के भावी नागरिकों का निर्माण करने की दिशा में शिक्षा की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। जब भी समाज में अवांछनीय तत्व सामाजिक व्यवस्था की स्थिरता के समक्ष एक चुनौती बनकर खड़े होते है तब समाज की नियमन प्रणाली अपनी प्रभावोत्पादकता और फलप्रदता के अस्तित्व की रक्षा की गुहार लेकर शिक्षा के समक्ष आ खड़ी होती है और शिक्षा तात्कालिक आवश्यकताओं के अनुसार अपना रूप परिवर्तित कर किंचित नया स्वरूप धारण कर इस चुनौती का उत्तर देने के लिए संलग्न हो जाती है। हिंसा, घृणा व आतंकवाद से पीड़ित वर्तमान इक्कीसवीं शताब्दी के युग में शिक्षा इस चुनौती के समक्ष सामाजिक जुड़ाव बढ़ाने हेतु शान्ति शिक्षा का स्वरूप लेकर आ खड़ी हुई है।

सामाजिक जुड़ाव बढ़ाने हेतु अहिंसा व शान्ति के लिए शिक्षा की परम आवश्यकता है। शान्ति की स्थिति प्राप्त करने की शिक्षा, शान्ति की स्थिति तक पहुँचने की प्रक्रिया ही शिक्षा है। यद्यपि भारतीय परिदृश्य में सामाजिक एकता व जुड़ाव की बात की जाये तो यह नया नहीं है। वेदों में कहा भी गया है ''वसुद्यैव कुटुम्बकम्'' अर्थात् सम्पूर्ण विश्व एक ही परिवार है। आज भी धार्मिक क्रियाकलापों में शान्ति पाठ **''ऊँ द्यौः शान्ति रन्तरिक्षः शान्तिः पृथ्वीः शान्ति रापः शान्तिः रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिः र्विश्वे देवाः शान्तिः ब्रह्मा शान्तिः सर्वः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ऊँ''** का उच्चारण बड़े ही मनोयोग से किया जाता है तथा अन्तरिक्ष से लेकर पृथ्वी तक, जल से लेकर वनस्पति तक, ब्रह्माण में व्याप्त अशान्ति को दूर करने तथा शान्ति की स्थापना के लिए इसका पाठ किया जाता है, जिसमें आदि दैविक, आदिभौतिक तथा आध्यात्मिक सभी प्रकार की शान्ति हो। सफल समाजीकरण सुसंगत, सुखी, वांछनीय और शान्तिप्रद समाज की प्रत्याभूति होती है। समाज में व्याप्त संघर्ष, तनावों व टकराव का स्त्रोत मानव मस्तिष्क ही है। शान्ति शिक्षा मानव के मानस में विकसित होती हुई वैचारिक प्रक्रिया से ध्वंस, विनाश, संघर्ष एवं हिंसा जैसे तथ्यों का विनाश करते हुए रचनात्मकता, सहिष्णुता, शान्ति एवं अहिंसा जैसे तत्वों के प्रक्षेपण व निर्माण की प्रक्रिया है। यह हमारे मूल्यों, अभिवृत्तियों तथा सामाजिक सांस्कृतिक विविधताओं के प्रति हमारे दृष्टिकोण में सहिष्णुता तथा मानवीय गरिमा के तथ्यों का समावेश करवाने की प्रक्रिया है।

आज सत्ता व विकास को हासिल करने की अन्धी दौड़ में दीर्घकालिक मानव–मूल्य प्रायः सभी देशों में पीछे छूट गये है। अनेक द्वंद्वों, प्रतियोगिताओं, होड़ एवं छद्म विकास के मकड़जाल में उलझा आज का विश्व लगभग अशान्त–सहवास का प्रतिनिधित्व कर रहा है। इस संबंध में हमारे पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का यह कहना एकदम समीचीन है कि 'हमारा सपना– लोग स्वचछ–हरित पर्यावरण में रहे, निर्धनताहीन समृद्धि में जिएँ, युद्ध की आशंका से मुक्त, शांति में रहे, सबकी धरा, सबके लिए सुख–स्थली हो।' कलाम साहब का यह स्वप्न अपने साकार रूप में शान्ति व विकास की शिक्षा के समावेशी स्वरूप का हिमायती है। वैसे भी अपने व्यापक मायने में शिक्षा–रूपी पद शांति व विकास का पर्याय है, अशांति व पिछड़ापन तो उसकी अनुपस्थिति के कारण ही पैदा होते हैं। इसलिए शांति व विकास की शिक्षा को एक संयुक्त विचारणीय मुद्दा बनाकर, इसकी समावेशी–शिक्षा को मंच देना, आज के युग की महती आवश्यकता है।

शान्ति शिक्षा का सम्प्रत्यय

'शान्ति शिक्षा का तात्पर्य ऐसी शिखा से है जो लोगों में दया, प्रेम, सहयोग तथाअसिा की भावना का सृजन कर शान्ति एवं विवेकपूर्ण समाज की संरचना कर सके। व्यक्ति में अंतर्दृष्टि, ज्ञान एवं क्षमता का विकास कर शांत एवं एकीकृत समाज के निर्माण में उसकी अहम भूमिका निभाने एवं योगदान के लिए तत्पर किया जा सके और विश्वबन्धुत्व का भाव स्थापित किया जा सके। लोकतांत्रिक समाजवादी एवं पंथनिरपेक्षवादी देश की शासन व्यवस्था में शान्ति शिक्षा की महती भूमिका है।

भारत का प्रमुख ग्रंथ 'गीता' ने संपूर्ण विश्व व प्रत्येक व्यक्ति में शांति स्थापना की बात की है। यह हमारी मानवीय एवं सामाजिक समस्याओं का बुद्धिमतापूर्ण हल खोजने में मदद करता है। गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि स्वयं से परे हट कर संपूर्ण मानवता के लिए लड़ो जिससे अन्याय समाप्त होकर न्याय का साम्राज्य स्थापित हो। यदि अपनु शत्रु को समाप्त करना चाहते हो तो नफरत करना छोड़ दो। सभी को समान निगाहों से देखो, विश्व में अशांति अपने आप समाप्त हो जाएगी। जैसा व्यवहार अपने लिए चाहते हो वैसा व्यवहार दूसरों के साथ करो। दूसरों की पीड़ाओं को महसूस करो। गीता एवं तत्व दर्शन में तार्कित चिंतन को ही समस्या का समाधान माना गया है। तार्किक चिंतन द्वारा ही समस्या को समझा जा सकता है तथा उसी के द्वारा ही वास्तविक सत्य की खोज की जा सकती है। अपने ज्ञान का आदान–प्रदान एवं दूसरों की सेवाके लिए तत्पर रहना ही तार्किक चिंतन का आधार स्तंभ है। तार्किक चिंतन द्वारा स्वयं ही समस्याओं एवं सामाजिक विसंगति से उभरने वाली समस्याओं को समझकर उनका निराकरण किया जा सकता है।

जैन दर्शन में भी वास्तविक ज्ञान आत्मिक शांति को माना है जो शिक्षा द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। जैन दर्शन की दृष्टि से जीवन में सच्चा सुख, शांति पाने के लिए सच्ची श्रद्धा, सच्चा ज्ञान, सही आचरण, जीवन के प्रति निर्मल दृष्टि तथा हमें प्रति क्षण सजग रहना होगा कि हमारा अविवेक, हमारी मिथ्या आकांक्षाएँ या हमारा अहंकार हमें मलिन तो नहीं बना रहा, आत्म ज्ञान की प्राप्ति के लिए हमें स्वयं में शांति की खोज करनी होगी। जैन दर्शन के प्रमुख तत्व ज्ञान, आत्मिक ज्ञान, तप, त्याग, द्रव्य, गुण, पर्याय, सातों तत्वों में आत्मका प्रमुख है। त्रिरत्न– सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र। पंच महाव्रत– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य। षट् द्रव्य– अजीवद्रव्य, पुद्गल, धर्म–अधर्म, द्रव्य, आकाश, द्रव्य, काल द्रव्य। दशलक्षण पर्व–उत्तम, क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम तप अकिंचन, ब्रह्मचर्य, स्यादवाद व अनेकांतवाद। उसने सभी एकांतिक मतों को अनेकांत के रूप में प्रतिष्ठित किया है। वस्तु या तत्व के स्वरूप को समझने के लिए जैन धर्म के सिद्धांत प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण होते है। वैश्विक समस्याओं को सुलझाने में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। श्रद्धापूर्वक चिंतन–मनन करने से आत्म–ज्ञान की प्राप्ति होती है, और आत्म ज्ञान की प्राप्ति से ही सच्ची शांति की प्राप्ति होती है। जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् दर्शन अर्थात् यथार्थ दृष्टि (विवेक दृष्टि) वास्तव में विवेक दृष्टि ही व्यक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है, यही ज्ञान प्राप्ति की कसौटी है और इसकी सार्थकता मानव को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाती है। मानव में विवेक उसकी समीचीन दृष्टि का होना है। समीचीन दृष्टि से तात्पर्य है हित–अहित, सत्य–असत्य, करणीय व अकरणीय, हानि–लाभ व सुख–दुख आदि के सम्यक् स्वरूप को पहचानना व निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना। मानव का विवेक जब जाग्रत हो जाता है तो संपूर्ण सृष्टि में शांति की स्थापना स्वतः ही हो जाती है। परिवेश में आया परिवर्तन समाज और सामाजिक मानसिकता को नयी दिशा और नपया रंग प्रदान करता है। जो चल रहा होता है वही परिवेश की माँग के अनुरूप नया स्वरूप प्राप्त करने लगता है। जीवन और साहित्य दोनों ही इस नियम की चोट को सहते हैं। अतः सोच बदलती है तो साहित्य भी बदलने लगता है। लेकिन प्रचीन साहित्य का अध्ययन मनुष्य के भावों एवं विचारों के परिष्करण, विकसन और उन्नयन का महत्वपूर्ण माध्यम है। युग विशेष की सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैचारिक पृष्ठभूमि के साथ उसके संघर्षो, परिवर्तनों तथा महत्वपूर्ण मोड़ों की छाया साहित्य के आईने में यथावत् देखी जा सकती है, इसी कारण साहित्य को मानवीय सत्ता के अध्ययन की संज्ञा दी जाती है। साहित्य द्वारा हम मानव में चिंतन, मनन, जागृति उत्पन्न कर सामाजिक परिवेश में आये दिलाव को बदल सकते है, लोगों के दृष्टिकोण को सकारात्मक रूप प्रदान कर समस्त मानव जगत में शांति स्थापित कर सकते हैं।

शान्ति शिक्षा के उद्देश्य

1. शांति के लिए पहल इसका प्रमुख उद्देश्य है।
2. समाज में अशान्ति की जो स्थितियां हैं, संघर्ष या तनाव की जो स्थितियां है, उनके कारणों का पता लगाना तथा उनके निराकरण के उपाय सुझाना यह शांति का प्रमुख उद्देश्य होगा।
3. समाज का समग्र विकास करना क्योंकि सामाजिक असमानताएं हिंसा का कारण बनती है। इसलिए सबका समग्र विकास इसका एक और मुख्य उद्देश्य हो सकता है।

इसके अतिरिक्त निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत शांति शिक्षा के उद्देश्यों पर विचार कर सकते हैं–

1. युवा एवं बालकों के लिए श्रेष्ठ स्वास्थ्य, सुरक्षित शान्त एवं एकता वाले विश्व का निर्माण करना तथा ऐसे विश्व के निर्माण के लिये बालकों को तैयार करना।
2. अजन्मे एवं विश्व के बालाकें के लिए सुरक्षित भविष्य का अधिकार प्रदान करने वाले एकता के सूत्र में बंधे विश्व का सृजन करने में सहयोग देना।
3. अहिंसा पूर्ण कौशलों को विकसित करना एवं उनकी खोज के लिए पीढ़ी तैयार करना।
4. सीखने का श्रेष्ठ वातावरण सृजन करना जिसमें संघर्षों को दूर करने के अवसर मिले।
5. हिंसा की प्रकृति एवं दुष्प्रभावों का बोध कराना जिससे इसके प्रभाव में नई पीढ़ी न आये।
6. नई पीढ़ी की क्षमता, योग्यता एवं उर्जा को शांतिपूर्ण नागरिकता विकसित करने की दशा में परिवर्तित करना।
7. विश्व को मानवीयता से ओत–प्रोत बनाने हेतु परिवर्तन लाना।
8. जीवन की पूर्णता के लिए मूल्य एवं कौशलों को विकसित करना।
9. संघर्ष को न्यून करने के लिए सृजनात्मक व्यवहारों को पुष्ट करना।
10. शान्ति की संस्कृति को विकसित करना।

शान्ति शिक्षा की आवश्यकता

प्राचीन काल में छात्र अपने गुरुओं के आश्रम में रहकर विद्या अध्ययन करते थे। वही पर वे शस्त्रों, मूल्यों तथा अनेकों प्रकार की शिक्षा लेते थे। तब वे अपने गुरुओं द्वारा बताये गये मार्ग का ही अनुसरण करते थे। इसलिए वातावरण पूरी तरह शान्त था। छात्र अपने से बड़ों का आदर करते थे लेकिन धीरे–धीरे विकास की धारा में सामाजिक परिवर्तन हुए जिसके फलस्वयप जनसंख्या में वृद्धि होने लगी। इसके फलस्वरूप अनेकों समस्याओं ने जन्म लिया। जैसे–जैसे सुविधाएं बढ़ी वैसे–वैसे मनुष्य चिन्ता व तनाव में डूबता चला गया। क्योंकि जनसंख्या विस्फोट के कारण बालक धीरे–धीरे शिक्षा से भी वंचित होने लगा। उसे केवल अपने भोजन व आवास सम्बन्धी चिन्ताओं ने घेर लिया इसी कारण वह अधिकाधिक हाथ पैर मारने लगा। फलस्वरूप जंगल शहरों में परिवर्तित हो गये, और खुल हवा में श्वास लेने वाला व्यक्ति हर समय चिन्ताओं में श्वास लेने लगा। अब चिन्ताओं से उबरने के लिए उसे ऐसे सहारे की आवश्यकता महसूस हुई जो उसे इस संकट से उबार सके।

प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति वहाँ की शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। जिस राष्ट्र के शैक्षिक तंत्र जितने मजबूत होंगे। वह राष्ट्र उतनी ही प्रगति करता है। भारत जैसे जनसंख्या वाले देश में तो मूल्य परक शान्ति शिक्षा की आवश्यकता है। जहाँ बेरोजगारी, गरीबी, अशिक्षा व भुखमरी चारों तरफ व्याप्त है। केवल शान्ति शिक्षा के द्वारा ही इसका निराकरण किया जा सकता है। शान्ति शिक्षा के द्वारा ही हम बच्चों के मस्तिष्क में उच्च सामाजिक मूल्य स्थापित कर सकते है। जिससे प्राथमिक स्तर पर ही बच्चे उन मूल्यों को समझे व आत्मसात करें। जिनसे वे आपस में भाईचारा, समानता, सहानुभूति की भावना को समझ सकें, और उच्च स्तर में जाने तक इन मूल्यों का सदुपयोग करने लगेंगे तो स्वतः ही तमाम समस्याओं से हमें मुक्ति मिल जाऐगी। शान्ति शिक्षा द्वारा हम बच्चों में उच्च आदर्शो को स्थापित कर सकते है। शान्ति के लिए शिक्षा उन मानव के बारे में जानकारी देती है। जो शान्ति पूर्ण तथा स्वस्थ्य जीवन के लिए आवश्यक है। यह विस्तृत स्तर पर आकर्षक शिक्षण विधियों के बारे में जानकारी देती है। यह विभिन्न शिक्षाविदों द्वारा विभिन्न देशों में अपनाई गई है और बहुत अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुई है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य मात्र परिक्षाएं पास करना ही रह गया है। छात्र मूल्यों से विहिन है। सभी को आगे बढने की होड़ है। इस प्रतिस्पर्धा में छात्र अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे है। ऐसी स्थिति में उन छात्रों को शान्ति शिक्षा की सही मानये में छात्रों का विकास कर सकती है।

उपसंहार

शान्ति शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग व विश्व शान्ति की स्थापना के लिए एक अवधारणा के रूप में शनैः शनैः विकसित होती हुई आज एक वट वृक्ष के रूप में पुष्पित व पल्लवित है आज विश्व का प्रत्येक देश व प्रत्येक नागरिक शान्ति शिक्षा की आवश्यकता को तीव्रता से अनुभूत करता है व इसके बढते जा रहे महत्व को समझता है।

यद्यपि शान्ति शिक्षा को व्यापक रूप में अपना लिया गया है व इसके विकास हेतु निरन्तर अनुसंधान, शोध, अध्ययन व अध्यापन जारी है किन्तु इसके सैद्धान्तिक रूप को अपनाने से से ज्यादा लाभ न होगा। यदि हम सभी वास्तविक व सच्चे अर्थो में विश्व में शान्ति चाहते है तो हमें शान्ति शिक्षा में निहित ज्ञान को अपने व्यवहार में उतारना होगा। शान्ति शिक्षा को शिक्षा के साथ जोडकर यह कार्य सरलता व तीव्रता से किया जा सकता है। शान्ति शिक्षा के द्वारा ही हम बच्चों के मस्तिष्क में उच्च सामाजिक मूल्य स्थापित कर सकते है जिससे प्राथमिक स्तर पर ही बच्चे उन मूल्यों को समझे व आत्मसात करें। शिक्षा स्नातक में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों में शान्ति शिक्षा के प्रति जागरूकता के द्वारा इसे अधिक प्रभावी तरह से स्थापित किया जा सकता है। क्योंकि शिक्षा स्नातक के प्रशिक्षणार्थी ना केवल इसे आत्मसात कर सकते है अपितु इसे अपने विद्यार्थियों में भी तीव्रता से प्रसारित कर उनके आपसी भाईचारा, समानता, सहानुभूति को भावना को विकसित कर बच्चों में उच्च आदर्शो की स्थापना कर सकते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सर श्री (2011): शांति शक्ति शांति साहित्य, 252, नारायण पेठ, लक्ष्मी रोड़, पुणे 411030
2. सर श्री (2011): नींव नाइन्टी, शांति साहित्य, 252, नारायण पेठ, लक्ष्मी रोड़, पुणे 411030
3. आचार्य महाप्रज्ञ (1994): महावीर का अर्थ शास्त्र, आदर्श साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली– 110002
4. आचार्य महाप्रज्ञ (2005): अहिंसा के अछूते पहलू, जैन विश्व भारती लाडनूं (नागौर, राज.)
5. आचार्य महाप्रज्ञ (2005): अहिंसा और शांति, आदर्श साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली–110002